



आमीन

आहिस्ता कहनी चाहिए

मुस्तफ़ा

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अल्लाज़

अहमद यार खाँ साहब नईमी

फ़ाज़िल ज़ामिआ नईमिया मुरादाबाद



जमाअत रज़ा-ए-मुस्तफ़ा

वासनी, नागौर, राजस्थान



काम वो ले लीजिये तुमको जो राजी करे
ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोड़ों दुरूद

आमीन आहिस्ता कहनी चाहिये

मुसन्निफा:

हज़रत अल्लामा मुफ्ती हाजी अहमद यार खां साहब नईमी
फाज़िल जामिआ नईमिया, मुरादाबाद

बराए ईसाले सवाब
हाजी सरदार, इब्न अब्दुल हकीम, गेहलोत
मिन्जानिब
हाजी अल्लाह बख़्श इब्न हाजी सरदार
गेहलोत, महबूब डेरी

नाशिर:

जमाअत रज़ाए मुस्तफा बासनी, नागौर, राजस्थान

सन्ने इशाअत: अक्टूबर २०१३

कलिमाते तहसीन

यह बात बहुत हद तक सही है कि बहुत सारी वजूहात की बिना पर मुसलमानों के पांव इल्हादियत से आलूदा हो रहे हैं और उनके हाथ से दीन की डोर सरकती जा रही है मगर हमारे तालिवे इल्माना ख्याल में यह इल्हादियत से ज़्यादा बे इत्मीनानी का मस्अला है, हां यह अलग बात है कि यही अदमे इत्मीनान आगे चल कर उन्हें इल्हादियत के अंधे ग़ार में ढकेल देता है। बहुत से मुसलमान दीन की तालीमात के हवाले से बे इत्मीनानी के शिकार है और उसी बे इत्मीनानी व ज़ेहनी कशमकश में उन हज़रात की “कोशिशें” ज़्यादा कार फरमा हैं जिन्हें “काइद” के बजाए “काइद” कहना ज़्यादा बेहतर होगा, यह बिल्कुल मुसल्लमा सदाक़त है कि इंसानों को मज़हब के नाम पर जितना ज़्यादा बेवकूफ बनाया जा सकता है इतना किसी और बुनियाद पर नहीं। मुआसिर अहवाल पर नज़र डालें तो दीन व मज़हब के नाम पर जो लोग कच्चे ज़ेहन और भोले भाले अपराद को बे इत्मीनानी के मैदाने तीह में भटका रहे हैं वह ग़ैर मुक़ल्लिदीन हैं। बैरुनी ताक़तें उनकी पुश्त पर हैं और यह हदीस का नाम लेकर भोले भाले मुसलमानों को गुमराह कर रहे हैं। खुद को “अहले हदीस” कहलाते हैं मगर वाकिआ यह है कि अहादीसे नबविय्या की बरकात का करोड़वां हिस्सा भी उन्हें मयस्सर नहीं। सही मअनों में वह शख्स “अहले हदीस” कैसे हो सकता है जो अपने मतलब की हदीस याद कर ले और अपने मौक़फ के खिलाफ़ वाली हदीस छोड़ दे। दावा तो हदीस पर अमल का मगर शबो-रोज़ हदीस के नूर से ख़ाली। एक नहीं मुतअद्द मसाइल हैं जिन में यह ग़ैर मुक़ल्लिदीन भोले भाले कम पढ़े लिखे अवाम के ज़ेहन व दिमाग़ को उलझा कर रख देते हैं और ये बेचारे अवाम हदीस के नाम पर ख़ामोशी से वही करने लगते हैं जो ग़ैर मुक़ल्लिदीन चाहते हैं।

आमीन बिल्-जहर का मस्अला, 20 रकअत तरावीह का मस्अला, नमाज़ में हाथ बांधने का मस्अला और रफ़ यदैन् का मस्अला वग़ैरा

वगैरा मौजूआत पर कम पढ़े लिखे तो क्या बाज़ पढ़े लिखे हज़रात भी अक्सर औकात अहादीस का अदमे मुतालेआ और दीनी किताबों से दूरी के सबब ग़ैर शऊरी तौर पर उनके ख़ेमे में चले जाते हैं खास कर हमारे नौजवान भाई बड़ी तेज़ी से उनके शिकार हो रहे हैं और उनके दीन व मज़हब की साबिका बुनियादें इन्हिदाम पज़ीर हैं।

इस फिले के सैलाब की रफ्तार इतनी तेज़ है कि बस्तियां की बस्तियां डूब रही हैं। इस वक़्त की सबसे अहम ज़रूरत यह है कि इसका सही, मुनज़ज़म, ठोस, माकूल अन्दाज़ में जवाब दिया जाए, हालां कि इन ग़ैर मुक़ल्लिदीन और इस फिले के जवाब उलमाए किराम अरसे से देते आ रहे हैं और उनके मबीज़ात की इशाअत भी हो रही है लेकिन नाशिरीन उन्हें अवाम तक पहुंचाने में सही हक़ अदा नहीं कर पा रहे हैं और न ही अवाम को उसकी मालूमात फराहम हो पा रही है। मेरा ख़्याल है कि अब वक़्त बड़ी-बड़ी ज़ख़ीम किताबें लिखने का नहीं बल्कि छोटी-छोटी मुफ़ीद किताबें और इस्लाही मवाद से भरपूर किताबचों की इशाअत का है ताकि बेचारे कम पढ़े लिखे अवाम की ज़ेहनी ग़िज़ा भी हो जाए और उनकी दीनी ज़रूरत की तक्मील भी। ज़्यादा लिख लेना कमाल नहीं बल्कि अच्छा लिख लेना कमाल है, और यह अच्छा भी ऐसा हो जो आम मुसलमानों की दीनी ज़रूरत पूरी करनी की सलाहियत रखता हो, क़लम के जौहर ऐसे मौजूआत पर दिखाया जाना चाहिये जिन में बे राह रवी आम हो रही है और मुसलमान बे इत्मीनानी और फिर उसी रास्ते से इल्हाद की तरफ बढ़ रहे हैं। बा सलाहियत अपराद के लिये अवामी सतह के मौजूआत पर कुछ क़लम बन्द करना कोई मुश्किल काम नहीं बल्कि यह दीगर मौजूआत से निस्बतन ज़्यादा आसान है, मगर मालूम नहीं क्यों हम लोग इस तरह तवज्जोह नहीं दे पा रहे हैं, अगर ये भी नहीं हो सकता तो बेहतर ये है कि माज़ी क़रीब और माज़ी बईद के बुजुर्ग आलिमों व दानिशवरों की किताबों से मुतअल्लिका मसाइल निकाल कर छोटे-छोटे रसाइल की शकल में शाए किये जाएं जैसा कि कुछ जमाअतें कर भी

रही हैं, मगर इन में अस्त्री हिस्सियत का ख्याल रखना ज़रूरी है।

काबिले मुबारक बाद है जमाअत रज़ाए मुस्तफा बासनी कि उसने इस प्लेट फार्म में काम करने का मंसूबा बनाया। ज़ेरे नज़र रिसाला “आमीन आहिस्ता कहनी चाहिये” इस मंसूबे की पहली अमली शकल है। यह रिसाला हकीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार खां नईमी अलैहिर रहमत की मअरिका आरा किताब “जाअल् हक़” से माख़ूज़ है। जाअल् हक़ जैसी किताब तक अवामुन् नास के एक बड़े हल्के की रसाई नहीं और फिर आज कल लोगों के पास इतना वक़्त भी नहीं रह गया कि वो ज़ख़ीम किताब को हाथ लगाएं। आज का आम मिज़ाज यह है कि लोग कम वक़्त में ज़्यादा से ज़्यादा मालूमात हासिल करना चाहते हैं।

ज़ेरे नज़र रिसाला अवामुन् नास की मौजूदा ज़रूरत को भरपूर तरीका से पूरा कर रहा है, इस में मुसन्निफ ने ग़ैर मुक़ल्लिदीन के ऐतराज़ात और उनकी ग़लत फहमियों का मुस्कित जवाब दिया है। ग़ैर मुक़ल्लिदीन से मुतअस्सिर जो लोग अहादीस को बुनियाद बना कर आमीन बिल्-जहर के काइल व आमिल हैं, हज़रत हकीमुल उम्मत ने उनकी तशप्फी का सामान कर दिया है। जमाअत रज़ाए मुस्तफा बासनी उसी नहज पर उलमाए अहले सुन्नत की दीगर किताबें भी शाए करने और उन्हें तक्सीम करने का इरादा रखती है। यह बहुत मुबारक काम है, इसकी हौसला अफज़ाई की जानी चाहिये और अहम अहम रिसालों को मुख़तलिफ ज़बानों में शाए करके तक्सीम करना चाहिये ताकि ग़ैर मुक़ल्लिदियत के इस तूफान पर कुछ तो बन्द बांधा जा सके।

सादिक़ रज़ा मिस्बाही

मुदीरे ऐज़ाज़ी

माहनामा सुन्नी दअ्वते इस्लामी मुम्बई



الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ
وَعَلَى آلِكَ وَأَصْحَابِكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ ﷺ

आमीन आहिस्ता कहनी चाहिये

अहनाफ के नज़दीक हर नमाज़ी ख़्वाह इमाम हो या मुक्त्तदी या अकेला और नमाज़ जेहरी हो या सिर्री आमीन आहिस्ता कहे। मगर ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबियों के नज़दीक जेहरी नमाज़ में इमाम व मुक्त्तदी बुलंद आवाज़ से चीख़ कर आमीन कहें। इस लिये इस बाब की दो फ़स्लें की जाती हैं, पहली फ़स्ल में हमारे दलाइल, दूसरी फ़स्ल में वहाबियों के एतराज़ात मअ़ जवाबात।

पहली फ़स्ल

आमीन आहिस्ता कहना हुक्मे खुदा व रसूल के मुवाफ़िक़ है, चीख़ कर आमीन कहना कुरआने करीम के भी ख़िलाफ़ है और हदीस व सुन्नत के भी मुख़ालिफ़। दलाइल हस्बे ज़ैल हैं रब तआला फरमाता है: अपने रब से दुआ मांगो आजिज़ी से

أَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً۔

और आहिस्ता। (الاعراف: آیت ۵۵)

आमीन भी दुआ है लिहाज़ा यह भी आहिस्ता कहनी चाहिये।

ऐ महबूब जब लोग आप से मेरे मुतअल्लिक़ पूछें तो मैं बहुत नज़दीक हूँ, मांगने वाले की दुआ कबूल करता हूँ जब वह मुझ से दुआ करता है

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ
أَجِيبْ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ۔

(البقره: آیت ۱۸۶)

मालूम हुआ कि चीख़ कर दुआ उससे की जावे जो हम से दूर हो, रब तो हमारी शहे रग से भी ज़्यादा करीब है, फिर आमीन चीख़ कर कहना अबस बल्कि ख़िलाफ़े तालीमे कुरआनी है इसलिये कि आमीन

दुआ है।

हदीस नं० १ ता ८: बुखारी, मुस्लिम, अहमद, मालिक, अबू दाऊद, तिर्मिजी, नसाई, इब्ने माजा ने हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत की:

फरमाया नबी ﷺ ने कि जब इمام आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो क्योंकि जिस की आमीन फिरिशतों की आमीन के मुवाफिक होगी उस के गुज़िश्ता गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَمَّنَ الْإِمَامُ فَأَمِنُوا فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ تَأْمِينَهُ تَأْمِينَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ۔

इस हदीस से मालूम हुआ कि गुनाह की माफी उस नमाज़ी के लिये है जिस की आमीन फिरिशतों की आमीन की तरह हो और ज़ाहिर है कि फिरिश्ते आमीन आहिस्ता कहते हैं, हमने उन की आमीन आज तक न सुनी, तो चाहिये कि हमारी आमीन भी आहिस्ता हो ताकि फिरिशतों की मुवाफक़त हो और गुनाहों की माफी हो, जो वहाबी चीख़ कर आमीन कहते हैं वह जैसे मस्जिद में आते हैं वैसे ही जाते हैं उनके लिये गुनाहों की माफी नहीं होती क्योंकि वो फिरिशतों की आमीन की मुख़ालिफ़त करते हैं।

हदीस नं० ९ ता १३: बुखारी, शाफई, मालिक, अबू दाऊद, नसाई ने हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत की:

फरमाया नबी ﷺ ने कि जब इمام कहे “गैरिल् मग़दूबे अलैहिम् व लद् दाल्लीन” तो तुम कहो आमीन क्योंकि जिस का यह आमीन कहना फिरिशतों की आमीन कहने के मुताबिक़ होगा उसके गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَالَ الْإِمَامُ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ فَقُولُوا آمِينَ فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلَهُ قَوْلَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ۔

इस हदीस में दो मसअले मालूम हुए, एक यह कि मुक्त्तदी इमाम के पीछे सूरए फातिहा हरगिज़ न पढ़े, अगर मुक्त्तदी पढ़ता तो हुज़ूर

फरमाते कि जब तुम “व लद् दाल्लीन” कहो तो तुम आमीन कहो, मालूम हुआ कि तुम सिर्फ आमीन कहोगे, “व लद् दाल्लीन” कहना इमाम का काम है, रब तआला फरमाता है:

जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें वतन **إِذَا جَاءَ كُمْ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَجِرَاتٍ** फाम्तजनुहून۔ (الممتحنه: آیت ۱۰) छोड़ कर आएँ तो उनका इम्तिहान लो।

देखो, इम्तिहान लेना सिर्फ मोमिनो का काम है, न कि मोमिना औरतों का। किसी हदीस में नहीं आया कि **إِذَا قُلْتُمْ وَلَا الضَّالِّينَ فَقُولُوا آمِينَ** जब तुम व लद् दाल्लीन कहो तो तुम आमीन कह लो, मालूम हुआ कि मुक्तदी व लद् दाल्लीन कहेगा ही नहीं।

दूसरे यह कि आमीन आहिस्ता होनी चाहिये क्यों कि फिरिश्तों की आमीन आहिस्ता ही होती है जो आज तक हम ने नहीं सुनी। ख्याल रहे कि यहां फिरिश्तों की आमीन की मुवाफकत से मुराद वक्त में मुवाफकत नहीं बल्कि तरीकए अदा में मुवाफकत है, फिरिश्तों की आमीन का वक्त तो वही है जब इमाम सूरए फातिहा खत्म करता है क्योंकि हमारे मुहाफिज़ फिरिश्ते हमारे साथ ही नमाज़ों में शरीक होते हैं और उसी वक्त आमीन कहते हैं।

हदीस नं० 14 ता 18: इमाम अहमद, अबू दाऊद तयालसी, अबू यअूला मूसली तबरानी, दारे कुतनी और हाकिम ने मुस्तदरक में हज़रत वाइल इब्ने हजर से रिवायत की, हाकिम ने फरमाया कि उस की अस्नाद निहायत सहीह है।

हज़रत वाइल इब्ने हजर ने हुज़ूर ﷺ के **عَنْ وَائِلِ ابْنِ حَجْرَةَ صَلَّى مَعَ النَّبِيِّ** साथ नमाज़ पढ़ी, जब हुज़ूरे वाला **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا بَلَغَ غَيْرِ** “गैरिल् मग़दूबे अलैहिम् व लद् दाल्लीन” **الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ قَالَ آمِينَ** पर पहुंचे तो आप ने फरमाया आमीन **وَأَخْفَى بِهَا صَوْتَهُ** और आमीन में आवाज़ आहिस्ता रखी।

मालूम हुआ कि आमीन आहिस्ता कहना सुन्नते रसूलुल्लाह है।

बुलंद आवाज़ से कहना बिल्कुल खिलाफे सुन्नत है।

हदीस नं० 19 ता 21: अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने अबी शैबा ने हज़रत वाइल इब्ने हज़र से रिवायत की:

फरमाते हैं मैं ने हुज़ूर ﷺ से सुना कि आप ने पढ़ा "गैरिल् मग़दूबे अलैहिम् व लद् दाल्लीन" तो फरमाया आमीन और आवाज़ मुबारक आहिस्ता रखी।

قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ غَيْرَ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ فَقَالَ آمِينَ وَخَفَضَ بِهِ صَوْتَهُ۔

हदीस नं० 22 व 23: तबरानी ने तहज़ीबुल आसार में, और तहतावी ने हज़रत वाइल इब्ने हज़र से रिवायत की:

हज़रत उमर व हज़रत अली رضی اللہ تعالیٰ عنہما न तो बिस्मिल्लाह ऊंची आवाज़ से पढ़ते थे न आमीन।

قَالَ لَمْ يَكُنْ عُمَرُ وَعَلِيٌّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَجْهَرَانِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَلَا بِآمِينَ۔

मालूम हुआ कि आहिस्ता आमीन कहना सुन्नते सहाबा भी है।

हदीस नं० 24: ऐनी शारेह हिदाया ने हज़रत अबू मुअम्मर ؓ से रिवायत की:

हज़रत उमर बिन खत्ताब ؓ ने फरमाया, इमाम चार चीज़ें आहिस्ता

عَنْ عُمَرَ ابْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

कहे: अऊज़ु बिल्लाह, बिस्मिल्लाह, आमीन और रब्बना लकल् हम्द।

قَالَ يُخْفِي الْإِمَامُ أَرْبَعًا التَّعَوُّدُ وَبِسْمِ اللَّهِ وَآمِينَ وَرَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ۔

हदीस नं० 25: बैहकी ने हज़रत अबू वाइल से रिवायत की हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद ؓ ने फरमाया:

इमाम चार चीज़ें आहिस्ता कहे: बिस्मिल्लाह, रब्बना लकल् हम्द, अऊज़ु और अत्तहिय्यात।

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ يُخْفِي الْإِمَامُ أَرْبَعًا: بِسْمِ اللَّهِ، وَاللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ، وَالتَّعَوُّدُ وَالتَّشَهُّدُ۔

हदीस नं० 26: इमाम अबू हनीफा ؓ ने हज़रत हम्माद से उन्होंने ने इब्राहीम नखई से रिवायत की:

आप ने फरमाया कि इमाम चार चीजें आहिस्ता कहे: अऊजु बिल्लाह, बिस्मिल्लाह, सुब्हान कल्लाहुम्मा, और आमीन। यह हदीस इमाम मुहम्मद ने आसार में और अब्दुर रज़ाक ने अपनी मुसन्नफ में बयान की।

قَالَ أَرْبَعٌ يُخَفِّيهِنَّ الْإِمَامُ التَّعَوُّذُ وَبِسْمِ
اللَّهِ وَسُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَآمِينَ- رَوَاهُ
مُحَمَّدٌ فِي الْأَثَارِ وَعَبْدُ الرَّزَّاقِ فِي مُصَنِّفِهِ

अक़ल भी चाहती है कि आमीन आहिस्ता कही जाए, क्यों कि आमीन कुरआने करीम की आयत या कलिमाए कुरआन नहीं, इसी लिये न जिब्रीले अमीन इसे लाए न कुरआने करीम में लिखी गई बल्कि दुआ और ज़िकरुल्लाह है। तो जैसे कि सना और अत्तहिyyात, दुरूदे इब्राहीमी और दुआए मासूरा वगैरा आहिस्ता पढ़ी जाती हैं, ऐसे ही आमीन भी आहिस्ता होनी चाहिये। यह क्या कि तमाम ज़िक्र आहिस्ता हुए, आमीन पर तमाम लोग चीख पड़ें। यह चीखना कुरआने करीम के भी खिलाफ है, अहादीसे सहीहा के भी, सहाबए किराम के अमल के भी और अक़ले सलीम के भी। रब तआला अमल की तौफीक दे। दूसरे इस लिये कि अगर मुक्त्तदी पर सूरए फातिहा पढ़ना भी फर्ज हो और उसे आमीन कहने का भी हुक्म हो तो अगर मुक्त्तदी सूरए फातिहा के दरमियान में हो और इमाम वलद् दल्लीन कह दे, अब अगर यह मुक्त्तदी आमीन न कहे तो इस सुन्नत के खिलाफ हुआ और अगर आमीन कहे और चीखे तो आमीन दरमियान में आवेगी, कुरआन में ग़ैर कुरआन आवेगा और दरमियाने सूरए फातिहा में शोर मचेगा।

दूसरी फस्ल

इस मसअले पर ऐतराज़ात व जवाबात

अब तक हम ने ग़ैर मुक़ल्लिदीन के जिस क़दर ऐतराज़ात सुने हैं, तफ़्सील वार मअ जवाबात अर्ज करते हैं।

ऐतराज़ नं० 1: आमीन दुआ नहीं है, लिहाज़ा अगर यह बुलंद

आवाज़ से कही जावे तो क्या हरज है, रब ने दुआ आहिस्ता मांगने का हुक्म दिया है न कि दीगर अज़्कार का।

जवाब: आमीन दुआ है, इसका दुआ होना कुरआन शरीफ से साबित है। देखो मूसा عليه السلام ने बारगाहे इलाही में दुआ की:

ऐ रब हमारे! इनके माल बरबाद कर दे और इनके दिल सख्त कर दे कि ईमान न लाएं जब तक दर्दनाक

رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَى قُلُوبِهِمْ

فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوُ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ-

अज़ाब न देख लें।

(सुरह यونس आیت: ८८)

रब ने उनकी दुआ क़बूल फरमाते हुए इरशाद फरमाया:

रब ने फरमाया तुम दोनों की दुआ

قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا،

क़बूल की गई तो साबित क़दम रहो।

(सुरह यونس आیت ८९)

फरमाइये दुआ सिर्फ मूसा عليه السلام ने मांगी थी मगर रब ने फरमाया कि तुम दोनों की दुआ क़बूल की गई यानी तुम्हारी और हज़रत हारून عليه السلام की, हज़रत हारून ने दुआ कब मांगी थी, वजह यह थी कि उन्होंने ने हज़रत मूसा की दुआ पर आमीन कही थी, रब ने आमीन को दुआ फरमाया, मालूम हुआ कि आमीन दुआ है और दुआ आहिस्ता होना चाहिये। यह मसाइले कुरआनिय्या में से है।

ऐतराज़ नं० २: तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत वाइल इब्ने हजर से रिवायत है:

मैं ने नबी ﷺ से सुना कि आप ने “गैरिल् मग़दूबे अलैहिम् व लद्द दल्लीन” पढ़ा और आमीन फरमाया और अपनी आवाज़ को उसपर बुलंद किया।

قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ قَرَأَ غَيْرَ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا

الضَّالِّينَ وَقَالَ آمِينَ وَمَدَّ بِهَا صَوْتَهُ-

मालूम हुआ कि आमीन बुलंद आवाज़ से कहना सुन्नत है।

जवाब: आप ने हदीस का तर्जमा ग़लत किया इस में **مَدَّ** इरशाद

हुआ, **مُدْ** से बना, इसके मअना बुलंद करना नहीं बल्कि आवाज़ खींचना हैं। मतलब यह है कि हुज़ूर ने आमीन बर वज़न करीम कसूर से न फरमाई बल्कि बर वज़न क़ालीन अलिफ और मीम ख़ूब खींच कर पढ़ी। लिहाज़ा इस में आप की कोई दलील नहीं, तर्जमा की ग़लती है। ख़याल रहे कि मद का मुक़ाबिल कसूर है, ख़िफा का मुक़ाबिल जेहर है और रफअ का मुक़ाबिल ख़फज़ है। अगर यहां जहर होता तो दलील सही होती, जहर किसी रिवायत में नहीं। रब फरमाता है:

بَشَكَ رَبُّكَ تَأْتِيكَ جَانِبًا هُوَ بُلْبُلٌ (الاعلى آية) **إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى**
और पस्त आवाज़ को।

देखो रब ने यहां ख़िफा का मुक़ाबिल जहर फरमाया न कि मद।

ऐतराज़ नं० ३: अबू दाऊद शरीफ में हज़रत वाइल इब्ने हजर से रिवायत है:

नबी ﷺ जब फरमाते **وَلَدٌ دَالِّيْن** **قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا**
तो फरमाते आमीन और उस में अपनी **قَرَأَ وَلَا الضَّالِّينَ قَالَ آمِينَ وَرَفَعَ بِهَا صَوْتَهُ**
आवाज़ शरीफ बुलंद फरमाते थे।

यहां रफअ फरमाया जिस के मअना हैं ऊंचा किया, बुलंद किया। मालूम हुआ कि आमीन ऊंची आवाज़ से कहना सुन्नत है।

जवाब: इस के चन्द जवाब हैं, एक यह कि हज़रत वाइल इब्ने हजर की अस्त रिवायत में **مُدْ** है जैसा कि तिर्मिज़ी शरीफ में वारिद हुआ जिस के मअना खींचने के हैं, न कि बुलंद करना, यहां अस्नाद के किसी रावी ने रिवायत बिल्-मअना की **مُدْ** को रफअ से ताबीर फरमाया और मुराद वही खींचना है न कि बुलंद करना, रिवायत बिल्-मअना का आम दस्तूर था। दूसरे यह कि तिर्मिज़ी और अबू दाऊद की रिवायतों में नमाज़ का ज़िक्र नहीं, सिर्फ हुज़ूर की क़िराअत का ज़िक्र है, मुम्किन है कि नमाज़ के अलावा ख़ारिजी क़िराअत का ज़िक्र फरमाया हो मगर जो रिवायात हम ने पेश की हैं उन में नमाज़ का सराहतन ज़िक्र है लिहाज़ा अहादीस में तआरुज़ नहीं और यह अहादीस हमारे ख़िलाफ नहीं। तीसरे यह कि आमीन बिल्-जेहर और

आमीन ख़फ़ी की अहादीस में तज़ारुज़ है, मगर ज़हर वाली रिवायतें कुरआने करीम के ख़िलाफ़ हैं लिहाज़ा छोड़ने के लाइक़ हैं और आहिस्ता की रिवायतें कुरआन के मुताबिक़ हैं लिहाज़ा लाइकुल अमल हैं। चौथे यह कि आहिस्ता आमीन की हदीसों कियासे शरई के मुवाफ़िक़ हैं और ज़ेहरी आमीन की हदीसों उसके ख़िलाफ़, लिहाज़ा आहिस्ता आमीन की हदीसों काबिले अमल हैं, इसके ख़िलाफ़ काबिले तर्क। कुरआनी आयतों और कियासे शरई का ज़िक्र हम पहली फ़स्ल में कर चुके हैं। पांचवें यह कि आमीन ज़ेहर वाली हदीसों कुरआन शरीफ़ से और उन अहादीस से जो हम पेश कर चुके हैं, मन्सूख़ हैं। इसी लिये सहाबए किराम हमेशा आहिस्ता आमीन कहते थे और इसी का हुक्म देते थे और ज़ोर से आमीन कहने को मना करते थे। जैसा कि पहली फ़स्ल में ज़िक्र किया गया। अगर ज़ेहर की हदीसों मन्सूख़ नहीं थीं तो सहाबा ने अमल क्यों छोड़ दिया।

ऐतराज़ नं० ४: इब्ने माजा में हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है:

हुज़ूर ﷺ जब 'गैरिल् मग़दूबे अलैहिम् إِذَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَالَ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ व लद् दाल्लीन' फ़रमाते तो आमीन फ़रमाते यहां तक कि पहली सफ़ वाले قَالَ آمِينَ حَتَّى يَسْمَعَهَا أَهْلُ الصَّفِّ الْأَوَّلِ सुन लेते तो मस्जिद गूँज जाती। فَيَرْتَجُّ بِهَا الْمَسْجِدُ

इस हदीस में किसी तावील की गुंजाइश नहीं। यहां तो मस्जिद गूँज जाने का ज़िक्र है, गूँज बग़ैर शोर के नहीं पैदा होती।

जवाब: इस ऐतराज़ के चन्द जवाब हैं, एक यह कि आपने हदीस पूरी पेश नहीं की, अव्वल इबारत छोड़ दी, वह यह है, मुलाहिज़ा हो: عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ تَرَكَ النَّاسُ التَّامِينَ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْخ लोगों ने आमीन कहना छोड़ दी हालां कि हुज़ूर ﷺ

इस जुम्ला से मालूम हुआ कि आम सहाबए किराम ने बुलंद आवाज़ से आमीन छोड़ दी थी जिस पर सैयदना अबू हुरैरा यह शिकायत फ़रमा रहे हैं और सहाबा का किसी हदीस पर अमल छोड़

देना उस हदीस के नस्ख की दलील है। यह हदीस तो हमारी ताईद करती है न कि तुम्हारी। दूसरे यह कि अगर यह हदीस सही मान भी ली जाए तो अक्ल और मुशाहदे के खिलाफ है और जो हदीस अक्ल और मुशाहदे के खिलाफ है वह काबिले अमल नहीं खुसूसन जब कि तमाम अहादीसे मशहूरा और आयाते कुरआनिया के भी खिलाफ है।

क्यों कि इस हदीस में मस्जिद गूंज जाने का जिक्र है हालां कि गुंबद वाली मस्जिद में गूंज पैदा होती है न कि छप्पर वाली मस्जिद में। हुजूर ﷺ की मस्जिद शरीफ आप के ज़माने में मामूली छप्पर वाली थी, वहां गूंज पैदा हो ही कैसे सकती थी, आज कोई गैर मुक़ल्लिद साहब किसी छप्पर वाले घर में शोर मचा कर गूंज पैदा करके दिखा दें, इन्शा अल्लाह चीखते चीखते मर जायेंगे मगर गूंज पैदा न होगी। इस ऐतराज़ के बाकी वो जवाब हैं जो ऐतराज़ नं0 3 के मातहत अर्ज किये गए। तीसरे यह कि यह हदीस कुरआने करीम के भी खिलाफ है रब फरमाता है: لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ अपनी आवाज़ें नबी की आवाज़ से ऊंची न करो। अगर सहाबा ने इतनी ऊंची आमीन कही कि मस्जिद गूंज गई तो उन सब की आवाज़ हुजूर की आवाज़ से ऊंची हो गई, कुरआने करीम की सरीह मुख़ालफत हुई, जो हदीस, मुख़ालिफे कुरआन हो काबिले अमल नहीं।

ऐतराज़ नं0 5: बुख़ारी शरीफ में है:

हज़रत अता फरमाते हैं कि आमीन दुआ है और हज़रत इब्ने जुबैर और उनके पीछे वालों ने आमीन कही यहां तक कि मस्जिद में गूंज पैदा हो गई।

وَقَالَ عَطَاءٌ أَمِينَ دُعَاءِ أَمِّنِ ابْنُ الزُّبَيْرِ
وَمَنْ وَرَاءَهُ حَتَّى إِنَّ لِلْمَسْجِدِ لِلْحَجَّةِ

इस हदीस से साफ मालूम हुआ कि आमीन इतनी चीख कर कहना चाहिये कि मस्जिद गूंज जाए।

जवाब: इस ऐतराज़ के भी चन्द जवाब हैं, एक यह कि इसका पहला जुम्ला हमारे मुताबिक है कि आमीन दुआ है और कुरआने करीम फरमाता है कि दुआ आहिस्ता मांगो, देखो फस्ले अब्वल। दूसरे यह कि इस हदीस

में नमाज़ का ज़िक्र नहीं, न मालूम ख़ारिजे नमाज़ यह तिलावत हुई या नमाज़ में। ज़ाहिर यह है कि ख़ारिजे नमाज़ होगी ताकि उन अहादीस के ख़िलाफ़ न हो जो हमने पेश कीं। तीसरे यह कि यह हदीस अक़ल व मुशाहदे के ख़िलाफ़ है क्योंकि कच्ची और छप्पर वाली मस्जिद में गूँज पैदा नहीं हो सकती, लिहाज़ा वाजिबुत् तावील है। जनाब अगर कुरआने करीम की आयत भी अक़ले शरई और मुशाहदा के ख़िलाफ़ हो तो वहां तावील वाजिब होती है वरना कुफ़ लाज़िम आ जाता है। आयाते सिफ़ात को मुतशाबह मान कर सिर्फ़ ईमान लाते हैं उसके ज़ाहिरी मअ्ना नहीं करते क्यों कि ज़ाहिरी मअ्ना अक़ले शरई के ख़िलाफ़ हैं, जैसे:

उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ।

तुम जिधर फ़िरोगे उधर ही अल्लाह का मुंह है।

يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ، (الفتح آیت १०)

فَإِنَّمَا تُولَوْنَ وَجْهَ اللَّهِ، (البقره: १०)

खुदा के लिये हाथ मुंह होना अक़ल के ख़िलाफ़ है, लिहाज़ा यह आयात वाजिबुत् तावील हैं। रब फरमाता है:

जुल् करनैन ने सूरज को कीचड़ के चश्मे में डूबते हुए देखा।

فَوَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ-

(الكهف آیت १८१)

सूरज का डूबते वक़्त आसमान से उतरना और कीचड़ में डूबना ख़िलाफ़े अक़ल था, लिहाज़ा इस की तावील की जाती है, यह तावील हमारे हाशियतुल कुरआन में मुलाहज़ा करो। जनाब हदीस पढ़ना और है, हदीस समझना कुछ और।

खुलासा यह कि ऐसी कोई हदीस सहीह मरफूअ मौजूद नहीं जिस में नमाज़ में आमीन बिल्-जेहर की तसरीह हो, ऐसी सहीह हदीस न मिली है न मिलेगी। वहाबियों को चाहिये कि ज़िद छोड़ें और सिदक़ दिल से इमामे आजम अबू हनीफ़ा رحمته الله का दामन पकड़ें कि यही हुज़ूर صلی الله علیه وسلم का रास्ता है, इस मसअले की ज़्यादा तहक़ीक़ हमारे हाशिया बुख़ारी अरबी में मुलाहज़ा फरमाओ।

ऐतराज़ नं० 6: आहिस्ता अमीन के मुतअल्लिक आप ने जिस

कद्र हदीसों पेश की हैं वह सब ज़ईफ हैं और ज़ईफ से इस्तिदलाल नहीं कर सकते (वही पुराना याद किया हुआ सबक) देखो वाइल इब्ने हजर की तिर्मिज़ी वाली रिवायत जो तुम ने पेश की उसके मुतअल्लिक इमाम तिर्मिज़ी फरमाते हैं:

आमीन के बारे में सुफ़यान की हदीस शोबा की हदीस से ज़्यादा सहीह है। शोबा यहां कहते हैं **خَفَضَ** यानी हुज़ूर ने पस्त आवाज़ से कहा हालां कि यहां **مَدَّ** है यानी आवाज़ खींच कर आमीन फरमाई।

حَدِيثُ سُفْيَانَ أَصَحُّ مِنْ حَدِيثِ شُعْبَةَ
فِي هَذَا إِلَى أَنْ قَالَ وَخَفَضَ بِهَا صَوْتَهُ
وَأَنَّمَا هُوَ مَدٌّ بِهَا صَوْتَهُ۔

जवाब: खुदा का शुक्र है कि आप मुक़ल्लिद तो हुए, इमाम अबू हनीफा के न सही, इमाम तिर्मिज़ी के सही कि हर जरह आंख बन्द करके क़बूल कर लेते हैं। जनाब इस हदीस के ज़ोअफ़ की अस्ल वजह यह है कि यह आप के खिलाफ़ है, अगर आप के हक़ में होती तो आंख बन्द करके मान लेते। आप के इस सवाल के चन्द जवाब हैं।

एक यह कि हमने आहिस्ता आमीन की 26 सनदें पेश कीं, क्या सब सनदें ज़ईफ़ हैं और सब में शोबा रावी आ रहे हैं और शोबा हर जगह ग़लती कर रहे हों यह ना मुम्किन है।

दूसरे यह कि अगर यह 26 अस्नादें सारी की सारी ज़ईफ़ भी हों जब भी सब मिल कर क़वी हो गई जैसा कि हम मुक़द़मे में अर्ज़ कर चुके हैं।

तीसरे यह कि शोबा इमाम आज़म अबू हनीफा رحمته الله के बाद अस्नाद में शामिल हुए जिन से हदीस ज़ईफ़ हुई, इमाम साहब को यही हदीस बिल्कुल सहीह मिली थी, बाद का ज़ोअफ़ पहले वालों को मुज़िर नहीं।

चौथे यह कि अगर पहले से ही यह हदीस ज़ईफ़ थी जब भी इमामे आज़म सिराजे उम्मत इमाम अबू हनीफा رحمته الله के क़बूल फरमा लेने से क़वी हो गई जैसा कि हम मुक़द़मे में अर्ज़ कर चुके हैं।

पांचवें यह कि चूँकि इस हदीस पर आम उम्मत मुस्लिमा ने अमल

कर लिया है लिहाजा हदीस का जोअफ जाता रहा और हदीस कवी हो गई। जैसा कि हम मुकद्दमे में अर्ज कर चुके हैं।

छठे यह कि इस हदीस की कुरआने करीम ताईद कर रहा है और बुलंद आवाज की हदीस, कुरआने करीम के खिलाफ है, लिहाजा आहिस्ता आमीन की हदीस कुरआन की ताईद की वजह से कवी हो गई, जैसा कि हम मुकद्दमे में अर्ज कर चुके हैं।

सातवें यह कि इस हदीस की कियासे शरई ताईद कर रहा है और बुलंद आवाज की हदीस कियासे शरई और अक्ले शरई के खिलाफ है लिहाजा आहिस्ता आमीन की हदीस कवी है और बुलंद आवाज की हदीस ना काबिले अमल। गरजे कि आहिस्ता आमीन की हदीस बहुत कवी है उस पर अमल चाहिये।

ऐतराज नं० ७: अबू दाऊद शरीफ में हजरत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم जब सूरए फातिहा से फारिग होते तो:

इस तरह आमीन कहते कि सफे अव्वल में जो आप से करीब होता वह सुन लेता।

قَالَ امِينَ حَتَّى يَسْمَعَ مَنْ يَلِيهِ مِنْ

الصَّفِّ الْأَوَّلِ-

जवाब: इसके दो जवाब हैं, एक यह कि यह हदीस आप के भी खिलाफ है क्यों कि पहली आप की रिवायतों में था कि मस्जिद गूंज जाती थी और इस में यह आया है कि सिर्फ पीछे वाले एक दो आदमी ही सुनते थे। दूसरे यह कि इसी हदीस की अस्नाद में बिशर इब्ने राफेअ आ रहा है, इसे तिर्मिजी ने किताबुल जनाइज में, हाफिज ज़हबी ने मीज़ान में सख्त ज़ईफ़ फरमाया। अहमद ने इसे मुन्किरुल हदीस कहा। इब्ने मईन ने इस की रिवायत को मौजूअ करार दिया। इमाम नसाई ने इसे कवी नहीं माना। (देखो आफताबे मुहम्मदी, लिहाजा यह हदीस सख्त ज़ईफ़ है, काबिले अमल नहीं।)